

डॉ. अगस्त कोकेल, नीतिवचन, सत्र 10

© 2024 अगस्त कोकेल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. ऑगस्ट कोकेल और नीतिवचन की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र संख्या 10 है, लेडी विजडम और लेडी फॉली, नीतिवचन 9।

हम आज अपनी बातचीत में नीतिवचन 1 से 9 में नीतिवचन के परिचय के निष्कर्ष पर आते हैं। और यहीं पर हमने अपने लिए बहुत स्पष्ट रूप से लेडी विजडम और लेडी फॉली की तुलना की है, वह विकल्प जो हमें जीवन और मृत्यु के बीच चुनने की आवश्यकता है। रास्ते भर हमारे सामने प्रस्तुत किया गया। तो यहाँ इस अध्याय में, लेडी विजडम को एक गृहस्थ के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत किया गया है।

और उसने जो किया है वह मेहमानों को उस दावत में आमंत्रित करना है जो उसे देनी है। इसलिए उन्होंने अपना बैकेट हॉल तैयार किया है जो सात खंभों पर टिका हुआ है। निःसंदेह सात हमेशा पूर्णता की संख्या होती है और यहां संख्याओं का इससे अधिक कुछ नहीं निकाला जाना चाहिए।

यह सिर्फ यह सुझाव दे रहा है कि यह वास्तव में एक शानदार हॉल है। यदि आपके पास छत को सहारा देने के लिए एक बड़ी इमारत है, तो आपको रास्ते में खंभे लगाने होंगे ताकि छत ऊपर रहे। और इसलिए, लेडी विजडम का बैकेट हॉल इतना बड़ा है कि हर कोई आ सकता है।

उसने अपना मेनू तैयार कर लिया है। उसने अपनी शराब डाल दी है। उसने अपने बछड़े का वध कर दिया है।

बेशक, प्राचीन काल में, मांस को खुर पर संरक्षित किया जाता था। तू ने उस पशु को उस समय तक जीवित रखा जब तक कि तू उसे भोजन बनाने के लिये तैयार न हो गया। और मैं यह भी जोड़ सकता हूँ कि दुनिया के अधिकांश हिस्सों में आज तक उसी नीति का पालन किया जा रहा है।

मैं भारत में रहा हूँ और मुझे पता है कि वे अपनी मुर्गियां कैसे तैयार करते हैं। वे उन्हें तब पकड़ते हैं जब वे उन्हें खाने के लिए तैयार होते हैं। उसे अपने सर्वर मिल गए हैं।

उसने उन्हें अपने सभी निर्देश दिए हैं। और अब वह मेहमानों से अपील करती है। और मेहमान कौन हैं? खैर, ये वे लोग हैं जिन्हें समझ हासिल करने की ज़रूरत है।

जैसा कि वह यहां कहती है, उनकी सोच में थोड़ी कमी है। उनका ज्ञान पर्याप्त तीव्र नहीं है। और वे उसके पास आएँ और उन्हें भोजन मिलेगा और उन्हें दाखमधु मिलेगा और वे समझ के मार्ग पर चलेंगे।

अब यह बुद्धि का कार्य क्या है? खैर, ज्ञान के इस कार्य का वर्णन इन छंदों में किया गया है। किसी मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर मत दो। हम नीतिवचन अध्याय 26 में एक संपूर्ण

व्याख्यान देने जा रहे हैं, जहाँ हमारे पास मूर्खों के बारे में कहने के लिए और नीतिवचन के बारे में कहने के लिए बहुत कुछ होगा।

लेकिन मूल बात यह है कि आप अतार्किक तर्क नहीं कर सकते। इसे कहने का दूसरा तरीका यह है कि आप किसी ऐसे व्यक्ति को कुछ नहीं सिखा सकते जो इसे सीखने की स्थिति में नहीं है या इसे सीखना नहीं चाहता है, जो इसे सीखने से इनकार कर रहा है। यदि आप अतार्किक के साथ तर्क करने का प्रयास करेंगे, तो आप स्वयं अतार्किक बन जायेंगे और स्वयं को मूर्ख बना लेंगे।

इसलिए, यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति को सिखाने का प्रयास करते हैं जिसने पहले ही यह निर्धारित कर लिया है कि जिस परिसर से आप काम करते हैं वह गलत है, तो आपको केवल उपहास ही मिलेगा। अब मैं विश्वविद्यालय में एक प्रशिक्षक के रूप में अपने संदर्भ में इसका सबसे अच्छा उदाहरण दे सकता हूँ, हालांकि मैं वास्तव में मदरसा में काम करता हूँ, ज्ञानमीमांसा की हमारी मौलिक धारणा है, इसी तरह हम जानते हैं। अब आधुनिकतावाद का आधार क्या है जिसके द्वारा विश्वविद्यालय के प्रोफेसर संचालित होते हैं और विशेष रूप से जिसके द्वारा उनका विज्ञान लगभग विशेष रूप से संचालित होता है? ज्ञान का आधार यह है कि हम जो कुछ भी जानने में सक्षम हैं वह हमारी इंद्रियों के माध्यम से आता है और हमारे पास मौजूद तर्क से संसाधित होता है।

मूलतः यह इममानुएल कांट नाम के एक दार्शनिक के पास जाता है। और अगर कुछ भी उस परिभाषा से बाहर है, तो यह सिर्फ मूर्खता है, इसे बस हाथ से खारिज कर दिया गया है। अब यह ज्ञान का कैसा आधार है? यह कहने वाला कौन है कि ज्ञान प्राप्त करने का एकमात्र तरीका आपकी पाँच इंद्रियाँ हैं? मैं आपको उन सभी प्रकार के लोगों के बारे में क्यों बता सकता हूँ जिन्होंने प्रदर्शित किया है कि वे ऐसी चीजें जानते हैं जो वे अपनी पाँच इंद्रियों के माध्यम से कभी प्राप्त नहीं कर सकते थे।

लेकिन निश्चित रूप से, मैं कभी भी उन कहानियों को अपने बौद्धिक मित्रों के साथ साझा नहीं करता हूँ जिन्होंने पहले ही निर्णय ले लिया है, ओह यह सिर्फ मनोवैज्ञानिक विचलन है, वे लोग थोड़े कोयल पक्ष में हैं, आप जानते हैं, हो सकता है कि वे बहुत अधिक मशरूम खा रहे हों गलत प्रकार. और इसलिए, आप उनके साथ बहस में पड़ जाते हैं और जल्द ही आप मूर्खतापूर्ण बातें करने लगते हैं, जैसे वे मूर्खतापूर्ण बातें करते हैं। आपको समझना होगा, देखिए हम यहाँ दो अलग-अलग परिसरों में हैं।

आपने धार्मिक निर्णय लिया है. आपका धार्मिक निर्णय यह है कि आपके पास एकमात्र प्रकार का ज्ञान आपकी इंद्रियाँ और आपका कारण ही हो सकता है। और मैं कहता हूँ कि नहीं, मैं जानता हूँ और इस तथ्य के लिए मेरे पास बहुत सारे सबूत हैं कि एक ऐसा ज्ञान है जिसे इसके बाहर भी प्राप्त किया जा सकता है।

और मूलतः हमारे प्रभु यीशु मसीह के पुनरुत्थान की गवाही उनमें से एक है। लेकिन निःसंदेह, आप इसे हर तरह से खारिज कर सकते हैं। इसलिए उपहास करने वाले को निर्देश दो, तुम्हें केवल अपमान ही मिलेगा।

ध्यान से। बुद्धि एक आजीवन प्रक्रिया है। श्लोक नौ और दस में हम यही सीखते हैं।

ईमानदारी से जिएं और आप सुरक्षित रहेंगे। कुटिलता और कुटिलता के मार्ग से दूर रहो। जो आंख झपकाना है वह इत्जाबोम लाने वाला है।

यह एट्ज़ेव लाने वाला है। यह दर्द लाने वाला है। यह उन स्थानों में से एक है जहां दर्द शब्द का प्रयोग किया जाता है।

जब आप धोखे के साथ रहते हैं तो आप दर्द लेकर आते हैं। इसलिए, ज्ञान की शुरुआत पवित्र के ज्ञान से होनी चाहिए। वैसे, यहाँ जिस शब्द का प्रयोग किया गया है वह केवल कोडेशिम शब्द है।

यह वह शब्द है जिसका अर्थ पवित्रता है। यह ईश्वर को संदर्भित करने वाला शब्द है और ईश्वर के लिए इस्तेमाल होने वाले कोडेशिम शब्द के बारे में मूल बात यह है कि वह वह है जो अलग है। और इसका मतलब यह है कि ईश्वर किसी भी तरह से सृष्टि पर निर्भर नहीं है।

बल्कि ईश्वर सृष्टि का स्रोत है। अब आप देखिए कि वह मूलभूत अंतर है जिसके बारे में मैं पहले बात कर रहा था। यदि आप विश्वास करते हैं, यदि आप समझते हैं, और पहचानते हैं कि कुछ ऐसा है जो ब्रह्मांड को जीवन देता है।

जीवन सिर्फ ब्रह्मांड से संबंधित नहीं है, बल्कि कुछ ऐसा है जो ब्रह्मांड से अलग है जो इसे जीवन देता है। फिर निःसंदेह ऐसा ज्ञान है जो उस चीज़ से बिल्कुल बाहर है जिसे हम समझ सकते हैं और तर्कसंगत बना सकते हैं। और उसे हिब्रू में क़दोश शब्द से व्यक्त किया जाता है।

और इसलिए भगवान को क़दोश कहा जाता है। यह यहोवा कौन है जिसका वे नाम लेकर उल्लेख करते हैं? यह कौन है? खैर, वह वही है जो ब्रह्मांड से बाहर है। वह क़ादोस है और वह वह है जो ज्ञान देता है कि अकेले ही पूर्ण जीवन की संभावना है।

चरित्र के अपने परिणाम होते हैं। बुद्धि पहले है। अपने फायदे के लिए, अपने फायदे के लिए बुद्धि का अनुसरण करो।

मूर्ख का सबसे बुरा नुकसान अनिवार्य रूप से मूर्ख को ही होता है। और मूर्ख बहकाया जाता है। अब वह कौन सा प्रलोभन है जो हमारे संदर्भ में अधिकतर होता है? यह हमारी अपनी आत्म-प्रशंसा का प्रलोभन है।

हमारा अपना विश्वास है कि हम अच्छाई और बुराई को जानते हुए भी ईश्वर बन सकते हैं। वह महान प्रलोभन है। यह महान प्रलोभन है, विशेष रूप से आधुनिक युग में इसकी जड़ें ज्ञानोदय में थीं, लेकिन देववाद के युग और बुद्धिवाद के विकास में फलीभूत हुईं।

और लेडी फ़ॉली का यह वर्णन उस प्रकार के प्रलोभन का वर्णन करता है। यह प्रलोभन कि हम अपने ईश्वर में सभी चीज़ों के केंद्र में हैं, इसे पूरी तरह से वर्णित करता है। और लेडी फ़ॉली कहाँ है? अधिकांश सार्वजनिक स्थानों पर।

हमारे आधुनिक संदर्भ में निस्संदेह ये शिक्षा के स्थान हैं। यह उच्च समाज के स्थान हैं। यह सभी ऊंचे स्थानों पर है।

और लेडी फ़ॉली वहाँ है और वह इशारा कर रही है और वह आकर्षक है और वह कह रही है कि यहीं आपको मानवता की महानता मिलेगी। यहीं आपको जीवन की अच्छाई मिलेगी। और वह किसे आकर्षित करती है? खैर, यह वे लोग हैं जिनके पास वास्तव में अच्छी समझ नहीं है।

वास्तव में, यह धारणा कि मनुष्य ब्रह्मांड में सबसे महान चीज़ है, वास्तव में एक तरह से दयनीय है। हमें क्या लगता है कि हम ब्रह्मांड में सबसे महान चीज़ हैं? अब हम इस बात से इनकार कर सकते हैं कि हम यही सोचते हैं लेकिन निस्संदेह हमारा व्यवहार ऐसा ही है। हमारे सार्वजनिक स्थानों पर।

हम ब्रह्मांड में सबसे महान चीज़ें हैं और हम यह पता लगाने जा रहे हैं कि ब्रह्मांड में और कौन है। हम यह पता लगाने जा रहे हैं कि ब्रह्मांड में और क्या है। हम ब्रह्मांड के सभी रहस्यों का पता लगाने जा रहे हैं।

ब्रह्मांड में हमसे बड़ा कुछ भी नहीं है। लेकिन असल में ये चोरी का पानी है। और निस्संदेह, हम यह रहस्योद्घाटन से जानते हैं।

ज्ञान के उस वृक्ष में भाग न लें। वह तो चोरी है। और यहाँ ज्ञान लेखक बाद में इसे मूर्खतापूर्ण बताता है।

और वह कह रही है कि वह तुम्हें यह सब प्रदान करती है। अपने बारे में यह सब बहुत अच्छी सोच है। ये सब सोचते हैं कि आप भगवान की तरह हैं और आप अच्छाई और बुराई जानते हैं।

चुराया हुआ। चुराया हुआ। आपको लगता है कि यह स्वादिष्ट है।

आपको लगता है कि यह सचमुच एक रोमांच है। आप सोचते हैं कि यह वह सब कुछ प्रदान करता है जिसकी आपको तलाश थी। लेकिन यह धोखा है।

संकीर्णता। इस झूठे ईश्वर का अनुसरण संतोषजनक नहीं होगा। आप जानते हैं कि यूनानियों के प्राचीन त्योहार तांडव थे।

दर्शनशास्त्र की ये संगोष्ठियाँ। दार्शनिक. और हमारे पास वास्तव में इसी तरह की चीज़ के अपने संस्करण हैं जहाँ हम जिसे अपनी महानता मानते हैं उसका जश्न मनाते हैं।

लेडी फ़ॉली के सभी मेहमान एक ही स्थान पर पहुँचे। शीओल की गहराइयों में उसके मेहमान मिलेंगे। वह मृतकों का स्थान है।

मानवता स्वयं को जीवन प्रदान नहीं करती। और मूर्खता के इन तरीकों का अनुसरण करना जैसे कि हम स्वयं को बचा सकते हैं, मूर्खता ही साबित होने वाली है। इस प्रकार परिचय समाप्त होता है।

यहाँ भोज है. यहाँ तांडव है. आत्म-सम्मान और आत्म-उपलब्धि का उत्सव।

यहीं जीवन है और यहीं वह मार्ग है जो विनाश और मृत्यु की ओर ले जाता है। वह ईश्वर का भय है. यह शुरुआत है.

जब हम अपनी अगली बातचीत शुरू करेंगे तो आपको यह विकल्प चुनना होगा। हम नीतिवचनों के संग्रह से शुरुआत करने जा रहे हैं जो कहते हैं, ठीक है, यदि आप ज्ञान सीखना चाहते हैं, तो आपको क्या जानने की आवश्यकता है? और हम अपनी बाकी बातचीत नीतिवचनों पर यह सोचने में बिताएंगे कि यह कौन सा ज्ञान है जिसे आपको जानना आवश्यक है।

यह डॉ. ऑगस्ट कोंकेल और नीतिवचन की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र संख्या 10, लेडी विजडम और लेडी फ़ॉली, नीतिवचन अध्याय 9 है।